गोलपुर, बूंदी के शैलचित्र

डॉ0 डी0 पी0 तिवारी, कुलपति जयमीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, कोटा राजस्थान
डॉ0 अनुष्का ओझा, वी0 के0 एस0 विश्वविद्यालय, आरा

https://doi.org/10.61410/had.v19i1.172

बूंदी जनपद के हिंडोली तहसील में गोलपुर गांव में 25^0 16′ 15′′ उत्तरी अक्षांश एवं 75^0 25′ 13′′ पूरबी देशान्तर पर चम्बल की एक सहायक स्थानीय पहाड़ी नदी मनाली के किनारे मुकन्दरा पहाड़ी से सटे पठार में एक भव्य शैलाश्रय है (चित्र–1)। यह नदी एक बरसाती नदी है जिसमें पूरे वर्ष भर पानी नहीं रहता है किन्तु कहीं–कहीं गहरे भाग में पानी का जमाव स्थाई रूप से बना रहता है। इसकी तलहटी में पत्तियों के जीवाश्म जगह–जगह दिखाई देते हैं (चित्र–2)।

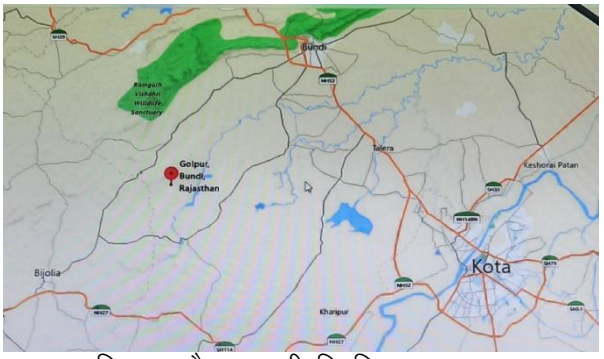

चित्र–1, शैलाश्रय की स्थिति

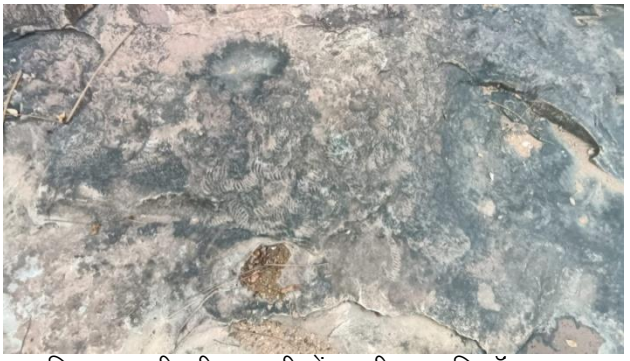

चित्र–2, नदी की तलहटी में अस्मीकृत पत्तियॉ

इस शैलाश्रय में पहुंचने के लिए बूंदी से रामनगर, गुरहा, नीम का खेड़ा, मेघरावत की झोपड़िया होते हुए बिजौलिया जाने वाली पक्की सड़क से भीम तल के पास रेलवे लाइन पार कर लगभग 26 किलोमीटर की दूरी तय करने के उपरान्त बाएं जाने वाली कच्ची सड़क पर 06 किलोमीटर चलकर पंहुचा जा सकता है।

यह शैलाश्रय पूर्बाभिमुखी है जो नदी के तल से लगभग 10 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस शैलाश्रय के सामने एक गिरी हुई चट्टान है जो शैलाश्रय को ढकने का काम करती है। यह शैलाश्रय लगभग 20 मीटर चौड़ी और 04 मीटर ऊंची है। इस शैलाश्रय के पीछे की दीवार पर अनेक चित्र बने हैं जो अभी तक बहुत अच्छी दशा में हैं और इन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। इनका विवरण निम्नवत् हैः

शैलाश्रय में प्रवेश करते ही इसकी समतल फर्श पर एक वृत्ताकार कप मार्क का गड्ढा देखने को मिलता है। इस तरह के 500[1]कप मार्क्स दर की चट्टान[2] में मिले हैं[3] जिनका संबन्ध पुरापाषाण काल तक बताया गया है[4]। यह देखने में छिछला है और इसकी चौड़ाई 16 सेन्टीमीटर है। इसका उपयोग यहां के रहने वालों ने अनाज इत्यादि को कूटने के उद्येश्य से किया होगा (चित्र–3)। इस शैलाश्रय की दीवारों पर भी इसी प्रकार के अन्य निशान मिलते हैं (चित्र–4), जिनके बनाए जाने के उद्येश्य और उपयोग पर टिप्पड़ी करना संभव नही हो पा रहा है।

चित्र–3,फर्श पर कप मार्क

चित्र–4 शैलाश्रय का सामने से चित्र और मस्तक पर 5 कप मार्क्स

इस शैलाश्रय में चित्रों को बनाने में तीन प्रकार के रंगों का प्रयोग किया गया है। कुछ चित्र लाल रंग से, दूसरे कत्थई रंग से तथा तीसरे प्रकार के चित्र सफेद रंग से बनाए गए हैं। चित्रों का एक वर्ग ऐसा है जिनकी बाहरी रेखाएं लाल रंग से बनाई गई हैं किन्तु उनके बीच का भाग सफेद रंग से भर दिया गया है। इनके निर्माण के लिए यहां स्थानीय रूप से उपलब्ध होने वाले हेमाटाइट और चूना पत्थर का प्रयोग किया गया है। चित्र इतने साफ सुथरे हैं कि उनके बनाने में अच्छे किस्म के ब्रश का प्रयोग किया जाना संभावित है। यहां चित्र बनाने का कार्य लम्बे समय तक अनवरत रहा, यह कहने का अवसर इस आधार पर है कि कहीं–कहीं चित्रों के ऊपर चित्र बनाए हुए मिलते हैं और जो चित्र पहले चरण में बनाए गए थे वे अब अपेक्षाकृत हल्के हो गए हैं जिनमें से कुछ पहचान में भी नहीं आते हैं। कहीं–कहीं पर पानी के रिसाव के कारण चित्र खराब हो रहे हैं (चित्र 5)।

चित्र–5, पानी के रिसाव से नष्ट होते चित्र

चित्र–6, बड़ी मानवा कृति

चित्र–7 मानवाकृति

चित्रित प्रसंगों को अनेक प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रथम वर्ग के चित्रों में मानवाकृतियों को लिया जा सकता है। प्रारम्भिक चरण में बनाई गई मानवाकृतियां बड़े आकार की हैं जबकि बाद में बनाई गई मानवाकृतियां छोटे आकार की हैं (चित्र–6,7)। दूसरे वर्ग के चित्रों में सामूहिक नृत्य चित्रों को रखा जा सकता है जो प्रायः सभी शैलाश्रयों में बने मिलते हैं (चित्र–8 एवं 20)। प्रश्नगत संदर्भ में नर्तकों का धड़ दो त्रिभुजाकृतियों को मिलाकर बनाया गया है जिससे उनका कटि प्रदेश अत्यन्त क्षीण बन गया है। उनकी टांगें लम्बी किन्तु पतली बनी हैं। दोनों हाथ फैले किन्तु नीचे लटके दिखाए गए हैं। इनके शिर बिन्दु समूहों द्वारा प्रदर्शित हैं जिनके ऊपर तीन पुष्पों से युक्त डाली लहराती प्रदर्शित की गई है। इन सभी चारों पुरुष आकृतियों के दाहिने हाथ में फूल के गुच्छे की भांति कुछ पकड़े हुए दिखाया गया है। इन चारों के आगे दाहिने पार्श्व में लम्बी टांगो वाला दुबले शरीर वाला मनुष्य अपना दायां हाथ आगे की ओर फैलाए ऐसा चित्रित है मानो वह शेष नर्तकों को निर्देश दे रहा हो। एक दूसरे प्रसंग में दो मानव आकृतियॉ

चित्र–8, समूहनृत्य चित्र

चित्र–9, पालतू पशुओं के बीचदम्पति

जिनमें एक स्त्री दूसरा पुरुष हो सकता है, हाथ में एक पात्र लिए बनाए गए हैं। उनके नीचे खूँटे से बंधे दो पशु (गायें) बनाई गई हैं। इनके सामने भी एक गाय जैसा पशु चित्रित है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह दम्पति इन पशुओं से दूध निकाल कर वापस जा रहा है। पशुओं को खूँटे से बंधा दिखाना तो पशु पालन का प्रतीक है ही (चित्र–9)। इस शैलाश्रय में गाय–बैल परिवार के पशुओं का बार–बार अंकन भी इसी तथ्य की पुष्टि करता है। यहां चित्रित पशुओं की एक विशिष्टता यह भी है कि सभी शान्त और विचरण करते चित्रित

हैं उनमें किसी भय का संचार नहीं है (चित्र–10,11, 12)। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस शैलाश्रय में पशुओं का शिकार करने का दृश्य नगण्य है।

चत्र–10, निर्भय होकर विचरण करते गाय–बैल परिवार के पशु

चित्र–11, शान्तभाव में खड़े पशु

चित्र–12,पालतू पशु समूह

चित्र–13, प्रारम्भिक पशु चित्र

मानव चित्रों की भांति ही पशु चित्रों को भी प्रारम्भिक अवस्था में सफेद रंग से अपेक्षाकृत बड़े आकार में बनाया गया है। इनमें एक भैंस और हिरन का चित्र उल्लेखनीय है (चित्र–13,14)। एक अन्य चित्र में एक

चित्र–13, हिरन

चित्र–14, पशु

पशु को कुछ खाते हुए चित्रित किया गया है जिसके साथ उसके पाचन मार्ग का चित्रण भी किया गया है (चित्र–14)। प्रारम्भिक स्तर में बनाए गए चित्रों के शरीर को रेखीय आकृतियों से सजाने का प्रयत्न भी इस शैलाश्रय के चित्रों में देखने का मिलता है (चित्र–15)। अन्य चित्रित प्रसंगो में ज्यामितिक डिजाइन (चित्र–16), मांगलिक प्रतीक (कोहबर? चित्र–17), वृत्त वलय (चित्र–18) तथा फूल–पत्तियों के चित्र बने मिलते हैं (चित्र–19)।

चित्र–15, रेखीय डिजाइन से सुसज्जित पशु

चित्र–16, ज्यामितिक डिजाइन

चित्र–17, मांगलिक प्रतीक

चित्र–18, वृत्तवलय

चित्र–19, फूल–पत्तियॉ

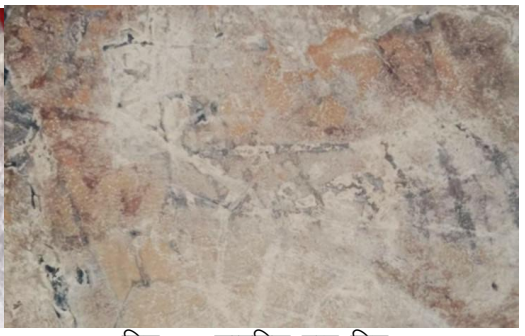
चित्र–20, सामूहिक नृत्य चित्र

इस प्रकार स्पष्ट है कि इस पठारी वनांचल में नवपाषाण काल में मनुष्य का प्रवेश हो चुका था। पानी एवं जंगली कन्दमूलों की सर्व सुलभता ने उसे यहां लम्बे समय तक जीवनयापन का अवसर प्रदान किया। इन चित्रों के निर्माता पशु आखेटक भले ही रहे हों किन्तु अब तक उनकी मैत्री पशु परिवार से विधिवत स्थापित हो चुकी थी और वे पशुपालक बन चुके थे। चित्रित पशुओं में गाय, डीलदार बैल, भैंस, सूअर, हिरन, कुत्ता, घोड़ा इसके साक्षी हैं। इस शिला फलक पर हिंसक पशुओं का अभाव है। सामाजिक जीवन के प्रसंग भी नहीं उकेरे गए हैं। पशुओं के शिकार के चित्र जो प्रायः शैल चित्रों में अनिवार्य रूप से देखने को मिलते हैं वे भी यहां अनुपस्थित हैं। उनकी धार्मिक भावना कुछ एक चित्रों से उजागर होती है। अतः नवपाषाणिक मानव का जो पशु–प्रेम और सादा जीवन इस शैलाश्रय से उभरकर आता है वह अपने में अद्वितीय है। कुछ विद्वानों ने यहां के कतिपय शैलचित्रों को मध्य पाषाणकालीन भी माना है[5]।

इस शैलाश्रय की खोज बूंदी निवासी श्री ओम प्रकाश कुक्की द्वारा की गई थी और उन्हीं के साथ इस शैलाश्रय के चित्रोंको देखने का अवसर मिला। इस क्षेत्र कार्य में डॉ0 विजय कुमार, प्रवक्ता, इतिहास विभाग, जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, कोटा का सहयोग रहा। हम उन दोनों के प्रति आभारी हैं।

संदर्भः

1. डॉ0 प्रद्युम्न कुमार भट्ट, संस्कृति एवं पर्यटन दशपुर–भानपुरा अंचल, भानपुरा, 2016, पृ0 16, 29
2. रमेश कुमार पंचोली, भानपुरा क्षेत्र मेंनवीन शोध, पुराकला, जिल्द 5, अंक 1–2, पृ0 75
3. Giriraj Kumar, Darki-Chattan: A Palaeolithic Culture Site in India, Rock Art Research, Volume 13, No. 1, Page 38. 4.
4. Giriraj Kumar, Darki-Chattan: A Palaeolithic Culture Site in India, Rock Art Research, Volume 13, No. 1, Page 45.
5. Meenakshi Dubey Pathak and Jean Clottes, Time and meaning Indian Rock Art from Early to Modern Times, New Delhi, 2023, PP 113.